श्रीतुलसीदल

—:*:—

लेखक—

चतुर्वेदी श्रीरामनारायण मिश्र, बी० ए०,

'ब्रज-भाषा की आशा'—'सङ्गीत-सङ्गर'—'सम्बोधन'—'कामुक'
'अम्बरीष'—'विरहिनी-बाला'—'मोमलता'—'सुधा-सीकर'
'एकता का तत्व,—'नृपति मङ्गलगान'—'जार्ज-सुयश'
'पंचराज का महाप्रपंच'—इत्यादि-इत्यादि अनेक
गद्य-पद्य के रचियता और प्रकाशक

—

श्रीनारायण निकुंज,
बाई का बाग़,
प्रयाग
१९४०

—

प्रथमावृत्ति १०००]

[मूल्य ४ आना

तस्यै तुलस्यै नमः

श्रीतुलसीदल—

समर्पण

—:०:—

यावज्जीवन श्रीतुलसी देवि

की

परम भक्त और श्रद्धालु उपासिका वैकुण्ठ-वासिनी,

मासी सुश्री प्रयागी देवी चतुर्वेदी

पितृव्या

की

पुण्य-स्मृति में यह पुस्तक

सादर समर्पित

है

॥ श्रीहरिः ॥

दिग्दर्शन और निवेदन

आयुर्वेद के ग्रन्थो मे तथा धर्मशास्त्र की पुस्तको मे 'तुलसी-दल' और 'धात्रीफल' की वड़ी महिमा प्रकट अक्षरो मे दिखाई गई है। यह दोनो वनस्पति सर्वत्र सुलभता से प्राप्त हैं। सतो-गुणी प्रकृति वाले मनुष्य के लिये दोनो रसायन का फल देने वाले हैं। दोनो ही दोनो दृष्टि से परम गुणकारी और हितकर हैं।

यो तो सर्वकाल मे दोनो अपने गुण का चमत्कार प्रत्येक प्राणी को अनुभव कराते हैं विशेप कर कार्तिक मास मे एक के पूजन और दूसरे के सेवन का विशेप महत्त्व वताया गया है। कोरा तर्क कोई काम सिद्ध नहीं कर सकता, जव तक समयोचित सक्रिय और सक्रम परीक्षा न की जावै। यही परिपूर्ण कर्म इसका समाधान है। किसी भी कर्म के लिये परीक्षा विश्वास आवश्यक है। सफलता पर आचरण अनिवार्य है।

कार्तिक मास मे स्त्री-जन 'पच भीपम' (पच-भीखम) व्रत और तुलसी जी का पूजन करती हैं। तुलसी जी का विवाह उत्सव और मगल विधान करती है। गान के साथ प्रातःकाल मडप छाकर "हरि-प्रिया" का उद्वाह, नारायण के सग करती हैं, वड़े भक्ति और प्रेम से तन्मय होकर अर्चना करती हैं। तात्पर्य सव का

स्पर्श, सग और सेवन है जो शारीरिक और मानसिक उभय यन्त्रों का सहयोग प्रयोग है।

इस गुणदाई उपाकर्म को धार्मिक रूप देकर इस मनुष्यलोक के कल्याण के अभिप्राय से, जनता मात्र के हृदय की प्रवृत्ति उन्मुख कराई जाती है। कार्तिक शुक्ला ११ से पूर्णमासी तक तो वर्ष में (एकवार ही) कम से कम इधर ध्यान आकर्पित कराया जाता है। उचित तो यही है कि नित्य पूजन किया जावे। तुलसीदल की हवा स्पर्श, दर्शन, स्थिति से अनेक शारीरिक और अन्तर के विकार दूर होते हैं, घातक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। इसका विवरण आगे विस्तार से किया गया है।

धात्रीफल को वैद्यक, रसायन के साथ तुलना देता है। इसका भी एक भिन्न पटल ही परिपूर्ण है, किन्तु कार्तिक की पूर्णिमा के दिन एक वार भी जो लोग इस वृक्ष के तले वैठ कर भोजन कर लेते हैं उसका अच्छा फल होता है। इसका गुण त्रिदोप-नाशी कहा जाता है।

कोई भी काम हो जव तक समयानुसार, सक्रम और सक्रिय न अनुष्ठान मे लाया जावै, वाञ्छित फल की प्राप्ति नहीं होती—नियम तो यही है-विधिच्युत कर्म फलप्रद नही होता। भ्रष्ट सकल्प, यम-नियम-धारणा-सयम से रहित, हृदय का अभीष्ट सिद्ध नहीं होता क्योकि कार्यकारिणी शक्ति केन्द्रीभूत हो प्रवल नहीं हो पाती।

जव तक आधिभौतिक और आध्यात्मिक योग एक सग क्रियाशील न हो तव तक आधिदैविक का स्वप्न ही रहता है।

ज्ञान-विज्ञान की हीनता के कारण कल्याण-कारिणी शक्ति, मन मे प्रस्फुरित ही नहीं हो सकती इसीलिए षोडषोपचार अर्चन के संग स्तुति, जप, पाठ का आध्यात्मिक नियम लगा दिया है और मानसिक कर्म (सङ्कल्प) सहित एक निर्दिष्ट अवधि तक साधन का आदेश है, जहाॅ अभ्यास ही की प्रधानता होती है। तभी क्रिया फलोन्मुखी हो सकती है।

मनसा, वाचा, कर्मणा के एकत्व रूप में क्रियाशील होने का नाम सच्ची एकता है। मन कहीं, वचन और, कर्म विपरीत होने से समस्त श्रम वृथा हो जाता है और अभीष्ट सिद्ध नहीं होता। इसलिये अन्यर्थ कर्म के लिये तीनो का एकीकरण परमावश्यक है। इस विषय मे कुछ थोडा सा दिग्दर्शन करा देना चाहता हूॅ।

'तुलसी पत्र' का उपाकर्म, दैविक, शारीरिक और आध्यात्मिक है। इस कारण इसे प्रथम ही स्थान देना उत्तम समझा—

इस लघु पुस्तिका मे मैंने अपना अनुभव, विद्वानों और आचार्यों के सफल प्रयोग तथा सस्कृतज्ञ, और अङ्गरेजी डाक्टरी मे विशेष स्थान रखने वाले सुयोग्य ख्यातनामा, भिषकवरों की सम्मतियाॅ सकलित कर दी हैं। गवर्नमेंट की एतद्विभाग की सरकारी रिपोर्टों में जहाॅ कहीं, तुलसी जी के प्रयोग से जो लाभ स्वीकार किया गया है—उसका अंश भी दे दिया गया है। कई अंग्रेज डाक्टर भी अपनी सम्मति, तुलसी-प्रयोग के विषय मे प्रकट कर चुके हैं।

'मनसा-वाचा-कर्मणा' के एकत्र प्रयोग के अभ्यास को वास्तविक एकता या तप कहते हैं—तप से अभीष्ट सिद्ध होता है। एक अद्भुत शक्ति पैदा होती है जो मनोरथ को सिद्ध कर देती है। आत्म विकाश हो जाता है और मनोकामना फलीभूत होती है।

अथच तुलसी पूजन की विधि भी इसमे लिख दी गई है। सौभाग्यवती नारियाँ किस प्रकार विधिपूर्वक पूजन करके, देश-कुल की रक्षा तथा अपना अभीष्ट और मनोरथ प्राप्त कर सकती हैं, इसके ज्ञान और विधान की आवश्यकता थी।

तुलसी जी का थावला निहायत साफ़-सुथरा हो उसे स्वच्छ जगह पर रखना चाहिये। धूप और हवा का पर्याप्त प्रवन्ध हो। थाले की मिट्टी साफ वो उर्वराशक्ति पूर्ण होनी चाहिये। पूजन के समय इतना अधिक पानी न दे देना चाहिये जिससे वृक्ष सड़ जावै। मास मे दो वार मिट्टी गोड़ देना चाहिये। पूजन की वस्तु सुन्दर स्वच्छ रखने से मनोभाव की अभिवृद्धि होती है। तुलसी का पेड़ लगाने तथा बीजरोपण का दिन रामनौमी है या निर्जला एकादशी है। रामा से विशेष महिमा श्यामा की है। कोई भी खाद्य वस्तु विना तुलसीदल प्रक्षेप किये नहीं भोजन करना चाहिये। एक तुलसीदल भोजन के अनेक दोष दूर कर देता है। इसी कारण वैष्णव-जन विना तुलसीदल पड़े कोई खाद्य पदार्थ अंगीकार नहीं करते।

अपने विचार से मैं जनता मे इस विद्या का ज्ञान प्रचार करने मे लोक का कल्याण समझता हूँ क्योंकि जो—

"अकाल मृत्यु हरणं, सर्व व्याधि विनाशनम्"

हो, उससे बढ़कर और ससार मे दूसरी वस्तु नहीं होती—आशा है कि हमारे भाई, प्रत्येक गृहस्थ अपने परिवार मे इस विद्या की महिमा फैलावेंगे और यथेष्ट लाभ उठावेगे।

जो विद्या इस पुस्तक मे बताई गई है वह अन्य पृष्ठ पर दिये ग्रन्थो के आधार पर प्रदर्शित की गई है। धार्मिक पुस्तकें भी इसका अनुमोदन करती है। आयुर्वेदशास्त्र से भी सम्मत है। परम्परा से इसकी रीति चली आई है। प्रत्यक्ष अनुभव इसका साक्षी है।

जैसे दो अक्षर के छोटे नाम, राम नाम मे अमोघ फल अन्तर्गत है उसी प्रकार इस सर्वत्र सुलभता से प्राप्त तुलसीदल की भी महिमा है। याद रहे तुलसी वृक्ष की पूरी-पूरी हिफ़ाजत रखनी चाहिये, इसके पत्ते सड़ने न पावें, न कीटाणु मलिन परिस्थिति के कारण उत्पन्न हो वृक्ष मे लग जावें, इसलिए गगाजल की धारा के पानी से वृक्ष का सिंचन करना ही ठीक है।

मृत्यु शय्या पर मनुष्य के मुख में तुलसी, गगाजल, सुवर्णखण्ड डालने का विधान है। इसका भी कारण कोई विशेष सिद्धान्त ही है। जिनको इसका रहस्य न विदित हो, वे अपने घर की माता, एव बहिनो से इसकी व्यवस्था जान कर सज्ञान बने। इत्यलम्।

श्रावणी एकादशी,
शुक्ल पक्ष, १९९७

चतुर्वेदी श्रीरामनारायण मिश्र
बाई का बाग़, प्रयाग
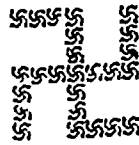
तुलसी के गुणों का परिचय देनेवाली प्रमाणिक पुस्तकें

१ इण्डियन मेडिसिनल प्लाण्ट्स—वसु और कीर्तिकर।

२ इण्डियन मैटीरिया मेडिका—के० एम० नाढकरणी।

३ दि लाइफ औफ इण्डियन प्लाण्ट्स—आई० फ्लीडरर।

४ फ्लोरा औफ दि अपर गङ्गेटिक प्लेन—जे० एफ० दूथो।

५ इण्डिजीनस ड्रग्स औफ इण्डिया—कनाईलाल दे।

६ कम्पेरेटिव हिन्दू मैटीरिया मेडिका—चन्द्र चक्रवर्ती।

७ फार्माकोपिया इण्डिका, कार्तिकचन्द्र वोस।

८ निघण्ट आदर्श (गुजराती), वायालाल ग० शाह।

९ चरक।

१० चक्रदत्त।

११ कैयदेव निघण्ट।

इत्यादि, इत्यादि।
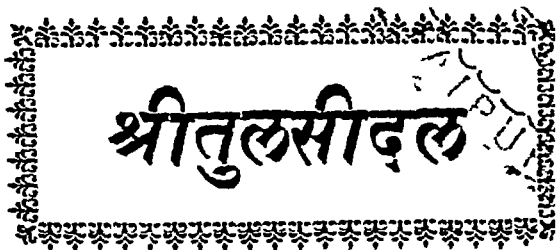
श्रीतुलसीदल की महिमा और प्रयोग

तुलसी का पौधा अपने कल्याणकारी प्रभाव से, भारत के घर-घर मे अपना गौरव और महत्व केवल अपने गुण के कारण प्राप्त कर रहा है।

आस्तिक हिन्दू भाव के अनुसार इस ससार मे जिनको गंगा, गीता, गायत्री, तुलसी, शालिग्राम की सेवा आदि का सहयोग प्राप्त हो गया, वे धन्य हैं, क्योंकि इनसे बढ़ कर तन-मन पोषक वस्तु ससार में अन्य कोई नहीं हो सकती।

जिस कुल मे अर्चा, पूजन भगवन् सेवा परम्परा से अब तक जारी है, उन वन्दनीय पूज्य कुलो के लिये विशेष उल्लेख की आवश्यकता नहीं है, किन्तु जिन वास्तविक भावधारी मनुष्यो के श्रद्धाशून्य हृदयों मे तुलसी की उपयोगिता किसी रूप मे अंकित नहीं है उनकी जानकारी के लिए आजकल की परिपाटी के अनुसार डाक्टरों की सम्मति उद्धरण कर उनका ध्यान आक-

र्पित करने की आवश्यकता थी क्योंकि वे अङ्गरेजी वाक्यों को जनार्दन-वाक्य समझते हैं। इसलिये 'तुलसीदल' की महिमा गुण तथा भिन्न-भिन्न प्रयोगो को दिखा कर इनको इस विषय का ज्ञान प्रदान करने की चेष्टा की गई है जिससे वे इस सुगम प्रयोग को व्यवहृत करके श्रद्धा स्थापित करें और सहज लाभ उठावें।

कोई इसे धर्म का नुस्खा समझ घबरायेंगे, और कोई इसे स्वस्थ्य जीवन के लिये रसायन समझेंगे। कुछ भी हो मेरा तात्पर्य यह है कि जनता इससे लाभ उठावेगी। प्रत्येक गृहस्थ को तुलसी तरु की स्थापना घर मे कर धर्म-कर्म एव वैद्यक के अनुसार इससे अनन्त लाभ उठाना चाहिये।

प्रातः स्मरणीय "गंगा, तुलसी और शालिग्राम" की उक्ति कुछ विशेष भाव रखती है और श्रद्धायुक्त विश्वासी हृदय वाले मनुष्य को आधि-व्याधि दोनो क्लेशों से मुक्त करती है। 'हाथ कंगन को आरसी क्या' व्यवहार मे लाइये। व्यर्थ देशी-विदेशी अज्ञात और अशुद्ध औषध सेवन मे पैसे न फेंकिये। जरा व्यवहार तो कीजिये। इसके जौहर आप ही खुल जाँयगे। आपका कोई नुकसान न होगा।

कविराज सुखराज प्रसाद जी बी० एस०-सी० आयुर्वेदाचार्य तुलसीदल का गुणगान इस रीति से करते हैं :—"भारतवर्ष के समग्र आस्तिक हिन्दू तुलसी के वृक्ष को परम पुनीत समझते हैं और बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। तुलसी का वृक्ष सर्वत्र ही

पाया जाता है। कार्तिक मास में स्त्रियाँ जब तुलसी का पूजन नियमानुकूल करती हैं, तब अनेक कामनाओं की पूर्ति सहज मे प्राप्त करती हैं। प्रत्येक हिन्दू के घर मे तुलसी का चोरा, घर के प्रधान स्थान में रक्खा जाता है। प्रत्येक मंगल-कार्य, पूजन और धार्मिक काम के अवसर पर इस पवित्र-पत्र का होना अनिवार्य है। तुलसी की जड़, पत्र और बीज औषध का काम देते हैं। और इसके प्रयोग से अनेक रोग दूर होते हैं। तुलसी के पत्रों में एक तरह का पीत-हरित तैल का सा पदार्थ पाया जाता है, जो कुछ समय तक रक्खा जाय तो दानेदार स्वरूप धारण करता है और उसे 'बासी कपूर' के नाम से सम्बोधन करते हैं।

तुलसी की जड़ ज्वर को नाश करती है। बीज शीतकर और स्निग्ध होता है। सूखा पत्र इसका अग्निवर्धक और 'लंग्स' (Lungs) से श्लेष्मा को छाँट कर बाहर गिरा देने वाला है। तुलसी पत्र कफ को छाँटने वाला और सर्दी जुकाम को यथा-विधि शान्त करने की शक्ति रखता है। तुलसी प्रत्येक हिन्दू घर की शोभा है, जीवन की रक्षा है। बिना तुलसी के घर अपवित्र समझा जाता है। डाक्टरी अनुसन्धान सिद्ध करता है कि तुलसी पत्रों में मलेरिया और मच्छरों को दूर कर देने के गुण मौजूद हैं। अनुभव सिद्ध बात है, तुलसी-पत्र के रस से शरीर प्रलेपित किया जाय तो मच्छर उसके पास नहीं फटकते। इस विषय पर "सर जार्ज वर्डउड" के लेख का उद्धरण विशेष रुचिकर होगा, वह इस प्रकार है :—

"वम्बई मे जव विक्टोरिया गार्डन और अलवर्ट अजायव-खाने की रचना की जा रही थी तव इस कार्य मे श्रम का योग देने वाले मजदूर मच्छड़ो से ऐसे काटे गये कि मलेरिया वुखार के शिकार वन गये। इतने मे एक चतुर हिन्दू मैनेजर ने यह स्वीकृति प्राप्त की कि वाग की सीमा के किनारे-किनारे तुलसी के पेड़ लगा दिये जायें। इससे वाग के भीतर काम करने वाले मजदूर तथा कार्यकर्ता और स्थायी राज सव के सव एक समय तक भले-चगे रहे और मलेरिया के ज्वर का कोप उस परिधि के भीतर से चटपट लोप हो गया।" यही कारण है कि हमारे पुरखों ने घर मे तुलसी जी का स्थान वडे सम्मान का वतलाया है और निरतर संरक्षित रखने के हेतु नित्य के पूजन के विधान मे मान लिया है।

इम्पीरियल मलेरियल कान्फरेन्स का रिज्रोल्यूशन भी तुलसी जी की महिमा गाता है—यह भी तुलसी को मलेरिया की अचूक दवा वताता है।

आयुर्वेद मे तो वुखार के नाम को जड़ से मिटाने वाली तुलसी जी ही की महिमा प्रत्यक्ष है। श्री शारङ्गधर जी लिखते हैं—"पीतो मरिच चूर्णेन तुलसी पत्रयो रसः— ......निहन्ति विपम ज्वरम्।"

मलेरिया की तो वात ही क्या है, तुलसी पत्र का उपचार नियम से किया जाय तो विषम ज्वर (Typhoid) भी दूर भाग

जाता है। कोनाइन से कान में सुनसुनी और सर में दर्द आदि अनेक पश्चातवर्ती शिकायतें पैदा हो जाती हैं—यह सभी लोग अनुभव करते हैं, किसी के कहने की बात नहीं है। तुलसी जी के पत्तों का रस काली मिर्च के चूर्ण के साथ खाने से मलेरिया ज्वर दूर होता है।

अलावा ज्वर के तुलसी का प्रयोग अन्य अनेक व्याधियों के निवारण में भी सफल होता है। लाइमजूस के साथ तुलसी के पत्ते मिला कर दाद खुजली पर लेप लगाने से लाभ होता है। ये चेहरे की चमक को चिकना बनाते हैं और मुख की शोभा बढ़ाते हैं। चेहरे के ऊपर स्याह दाग या अन्य विकारों का शमन करते हैं। रक्तदुष्टि की यह खासी दवा है। तुलसी के सूखे पत्ते पीस कर सुंघनी बनाकर सुंघाने से 'नासिका घात' अच्छा हो जाता है। कान के दर्द को दूर करने के लिये इसकी पत्ती का रस डाल दीजिये। अव्वल दर्जे की दवा है। तुलसी का काढ़ा बच्चों के उदर विकार को सुधार देता है। यकृत(Liver) की गड़बड़ी को दूर करता है।

तुलसी की ताजी पत्ती का रस छोटी इलायची के दाने के चूर्ण के साथ देने से वमन बन्द होता है।

नित्य एक माशा काली मिर्च के चूर्ण के साथ एक तोला ताजी पत्ती का रस प्रातःकाल सेवन करने से सब प्रकार के ज्वर की पूर्ण चिकित्सा हो जाती है और ज्वर नहीं आने पाता।

रक्षा का यह शक्ति तुलसी-पत्र में है। तभी तो "सर्वव्याधि विनाशनम्" कहने में कोई अत्युक्ति नहीं।

साँप के काटने पर भी तुलसी रक्षा करती है। सर्प के काटने पर फौरन ही तुलसी के पत्ते ले लो, और तुलसी वृक्ष की जड़ को मक्खन में मिला कर जहरीले स्थान पर लगा दो। जब तक इस लेप का रंग सफेद से स्याह होता जावे तब तक दूसरा लेप लगाते रहो। धीरे-धीरे विष उतर जायगा।

तुलसी सर्दी, जुकाम और खाँसी की अद्भुत औषध है। थोड़ा गाय का दूध और चीनी मिला कर तुलसी का काढ़ा बजाय चाय के पीने से सुस्ती, थकावट, सर्दी, खाँसी तथा सब हरारत दूर हो जाती है। नीचे का नुसखा परीक्षा से लाभकारी सिद्ध हुआ है। लोकहित के निमित्त लिख दिया जाता है :—

तुलसी मंजरी	आधा तोला
वच	आधा ,,
पीपल	आधा ,,
मुलहठी	आधा ,,
शर्करा	ढाई तोला

इनको एक सेर पानी में उबालो और जब आधा पानी रह जावे तो काढ़े को उतार लो; एक चमचा बच्चों को दिन में छः बार देना चाहिये। यह दवा उस खाँसी में जो कलेजा तोड़ होती है, अपूर्व लाभ पहुँचाती है।

तुलसी के बीज भी अद्भुत गुण रखते हैं। ये वीर्यवर्द्धक हैं और पराक्रम बढ़ाने वाले हैं। शोक है कि अब युवक कहलाने वाले कितने ही बालक धातु-विकार के कारण नपुंसकता का रोना रोते हैं। धनाभाव से क़ीमती दवा नहीं खा सकते। अतः धनहीन रोगियों के लिये, जो सद्वैद्य की चिकित्सा करने या अमूल्य औषध सेवन करने में असमर्थ हैं, यह नीचे का नुस्ख़ा जो अनेक बार परीक्षा में ठीक उतरा है लिख दिया जाता है। वे लोग इससे लाभ उठा सकते हैं।

तुलसी-बीज का चूर्ण २ माशा और पुराना गुड़ २ माशा दोनों को मिश्रित करके ताजे कृष्णा गौ के दूध में प्रातः-साय खाया जाय और ब्रह्मचर्य से रह कर पवित्र भाव एव स्वच्छाचरण से कुछ दिन इस औषध का नियमपूर्वक सेवन किया जाय, तो निश्चय उत्तम ही फल होगा। पान के साथ तुलसी की जड़ सेवन करने से वीर्य-पात जा स्वयं हो जाया करता है, दूर हो जाता है।

ऐसे सुन्दर गुणों से पूरित, पवित्र वन्दनीय तुलसीवृक्ष को, जो आधि-व्याधि विनाशक है, प्रत्येक घर में रखने का विधान है। पूजन व देख-रेख से यह स्वच्छ निर्विकार रहता है। श्रद्धा-भक्ति से वृक्ष साफ़-सुथरा रखा जा सकता है। साथ ही घर की वायु शुद्ध होती है। आर्य विद्वानों ने इसकी उपयोगिता और कल्याण का ध्यान करके इसे सब से पवित्र वृक्ष माना है। इसी से तुलसी श्रीहरि-प्रिया कहलाती है। प्रत्येक पुरुष को अपने स्थान

में तुलसी-वृक्ष की कतारें लगानी चाहिये। इसके कारण पवन स्वच्छ रहता है; अनेक रोग नष्ट होते हैं।

भगवान् के चरणामृत की प्रधान वस्तु यही तुलसी वृक्ष की मन्जरी है। चरणामृत अनेक वस्तुओं के संयोग से सिद्ध होता है। एक-एक वस्तु अमृत तुल्य है, तभी चरणामृत कहाता है। इनके सम्मिश्रण का गुण अमृत तुल्य होता है।

शालिग्राम शिला का गंगधार (Current) के जल से स्नान, जिसमें चन्दन चर्चित तुलसीदल रहता है, वह चरणामृत कहा जाता है। तुलसी सर्व-व्याधि-विनाशिनी है। अतः चरणामृत ग्रहण करते समय प्रत्येक वैष्णव यह श्लोक पढ़ लेता है कि अपर श्रोता सुनकर इसकी महिमा को समझें और प्रयोग में लावें।
श्लोकः—

"अकाल मृत्यु हरणं सर्व-व्याधि विनाशनम्।
विष्णोः पादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम्॥

कोई कोई ऐसा भी पढ़ते हैं, थोड़ा पाठान्तर है :—

अकाल मृत्यु हरणं सर्व व्याधि विनाशनम्।
शालिग्राम शिला तोयम् विष्णु पादोदकम् पिवेत्॥

इसमें सन्देह नहीं कि चरणामृत के अंगीभूत द्रव्यों में तुलसी-दल की ही प्रधानता है और इन सब के संयोग से एक अविदित रासायनिक-योग उत्पन्न हो जाता है, जो "अकाल मृत्यु हरण" का गुण दिखाता है। परीक्षा करके अनुभव कीजिये।

तुलसी पर वैज्ञानिक दृष्टि

आयुर्वेदालंकार श्री रामेश वेदी जी इसी विषय में इस प्रकार लिखते हैं—

गुण, देश भाषा की भिन्नता के कारण तुलसी के भिन्न-भिन्न नाम इस प्रकार है—

हिन्दी—तुलसी। संस्कृत—परिचय ज्ञापक नाम—सुमञ्जरी (सुन्दर पुष्प मञ्जरियों वाली)· बहुमञ्जरी (बहुत मञ्जरियो वाली) सुरभि, सुगन्धा (सुगन्धित पौदा), सुरसा (रसमय या सुगन्धित रस वाली)। गुण प्रकाशक नाम·—वृन्दा (एक पौराणिक गाथा के अनुसार विष्णु भगवान् से अभिशप्त वृन्दा नाम की एक सती स्त्री विष्णु पर पूजार्थ चढ़ाई जाने के लिए भूलोक मे तुलसी के रूप में बन गई), वैष्णवी (विष्णु पर पूजार्थ चढ़ाई जाने वाली); विष्णु-वल्लभा, विष्णु-प्रिया (विष्णु की प्रिया), देव-दुन्दुभि (देवताओं का नक्कारा, तुलसी वाले स्थान में देवता निवास करते हैं), भूतेष्टा (सब प्राणियों की प्रिय), पापघ्नी (रोगरूप पाप की नाशक)।

अंग्रेज़ी—Holy Basil (होलि वेसिल)।

लैटिन—Ocimum sanctum, Linn• (ओसिमम-सेक्टम लिन)।

नैसर्गिक वर्ग—लिबिएटी (Libiatae)

प्राप्ति-स्थान

भारत और लका मे सर्वत्र और हिमालय पर ३००० फ़ीट की ऊँचाई तक होती है। धार्मिक कार्यों में उपयोग करने के लिए हिन्दू इसे वहुत वोते हैं और प्रायः जगलो मे भी स्वय उगी हुई मिलती है। यह एक अत्यन्त पवित्र पौदा माना जाता है और प्रत्येक हिन्दू के वगीचे में, घर मे और मन्दिरों के आसपास मिल जाता है। हिन्दुस्तान में लगभग प्रत्येक यूरोपियन के भी गृह-उद्यान मे यह पौदा मिल जाता है और वहाँ यह हिन्दू मालियो द्वारा लगाया गया पाया जाता है। पश्चिमीय एशिया और अरेविया से मलाया प्रायद्वीप और आस्ट्रेलिया तक फैला हुआ है।

वर्णन

यह एक सुन्दर छोटा एक से तीन फीट ऊंचा पौदा है जिसके पत्ते, शाखा आदि प्रत्येक भाग मे रुचिकर प्रिय गन्ध आती है। पौदे की शाखाओं और पत्तो के पृष्ट पर विखरे हुए छोटे ग्रन्थियुक्त (Glandular=ग्लैण्डुलर) रोओं मे से स्रवित हुए एक उड़नशील तेल की उपस्थिति के कारण यह सुगन्ध होती है। इस तेल के अधिक भाग को पौदा छोट छोटे खानों में इकट्ठा कर के रख लेता है। पौदे की तीव्र वृद्धि के समय जव उसे भोजन की भी अधिक आवश्यकता होती है वह काम आता है। ऐसा प्रायः तव होता है जव पौदे में वीज लगते हैं; प्रत्येक वीज को

अधिक पोषक भोजन की आवश्यकता होती है। फूलने और फलने के समय यह देखा जा सकता है कि पौदे में गन्ध कम हो जाती है।

छाया मे उगने वाले पौदों की अपेक्षा खुले स्थानों मे उगने वाले पौदों में यह उडनशील तेल बहुत कम होता है। छाया पोदे को, पत्तों की वृद्धि करने के लिए प्रेरित करती है और इसलिए ऐसी अवस्था मे खाद्य पदार्थ की भी अधिक आवश्यकता होती है जिससे भविष्य के लिए यह ज्यादह जमा नहीं हो सकता। इसलिए ऐसे पौदे खुले स्थानों के पौदों की अपेक्षा जल्दी नहीं फूलते।

ग्रन्थियुक्त रोओं के अतिरिक्त पौदे का सम्पूर्ण पृष्ठ ऊन जैसे सूक्ष्म सफ़ेद भूरे से रग के रोओं मे आवृत होता है। खुली वायु के सम्पर्क मे आए हुए पत्तों के पृष्ठ से होने वाले वाष्पी भवन को यह बालों की स्तर कम करती है।

रासायनिक विश्लेषण—तुलसी के पत्तों मं एक पीताभ हरा उड़नशील तेल होता है। कुछ समय तक रखा रहने से यह स्फटिकाकार हो जाता है और तब उसे तुलसी—कपूर (Basi-Camphor=बेसि केम्फर) कहते हैं। उड़नशील तेल मे एक तारपीन (Terpene) होता है।

उपयोगी भाग—पत्ते, मूल और बीज; प्रायः पचाङ्ग।

संग्रह—ताजे पत्ते इकट्ठे कर सुखा लें और बन्द पात्र मे रख दें।

गुण

तुलसी लघुरूष्णा च रूक्षा कफ विनाशनी।
क्रिमि दोषं निहन्त्येषा रुचि कृद्वह्नि दीपनी॥

—धन्वन्तरि निघण्टु।

तुलसी कटुतिक्तोष्णा तुलसी श्लेष्म वातजित्।
जन्तुभूत कृमिहरा रुचिकृद्वाति शान्ति कृत्॥

—राज निघण्टु।

तुलसी कटुका तिक्ता हृद्योष्णा दाह पित्तकृत्।
दीपनी कुष्ठ कृच्छ्रास् पार्श्वरुकफ वातजित्॥

—भावप्रकाश।

तुलसी पित्तकृत् वात क्रिमि दौर्गन्ध्यनाशनी।
पार्श्वशूलाऽरति श्वास कास हिक्काविकारजित्॥

—राजवल्लभ।

प्रभाव—मूल ज्वरहर है। बीज लुआबदार और लेपक होते हैं। सूखा पौदा दीपक और कफ निस्सारक होता है। पत्ते प्रतिश्यायहर, ज्वरहर और कफ निस्सारक होते हैं।

मात्रा—दस से चालीस ग्रेन तक।

उपयोग

हिन्दू इस पौदे को बहुत पवित्र मानते हैं और इसके लिए पूज्य भाव रखते हैं। यह विनय और पवित्रता का प्रतीक है। विष्णु तथा कृष्ण पर पूजा में चढ़ाया जाता है।

तुलसी के पत्तों मे कफ-निस्सारक गुण होता है और इनका रस भारतीय वैद्य ज़ुक़ाम खाँसी मे प्रयुक्त करते हैं। शहद, अदरक और प्याज के रस के साथ इसके पत्तो की एक उत्तम कफ-निस्सारक औषधि बन जाती है और जुकाम तथा श्वास प्रणाली की शोथ में दी जाती है। खांसी मे बलगम आता हो तो चरक छोटी मक्खियों के शहद के साथ तुलसी का रस देता है—(चिकित्सा स्थान, अ १८, ७२)। श्वासहर दस औपधियो मे चरक ने इसका उल्लेख किया है (सूत्रस्थान, अध्याय ४, ३७)। तुलसीपत्र, कण्टकारी मूल, भारगी, गिलोय और सोंठ सब का सम भाग में मिलित दो तोले का कषाय, खांसी और छाती के रोगों में दिया जाता है। (चक्रदत्त, हिक्काश्वास, श्लोक ११)। सूखे पौदे के दस भाग मे एक भाग कषाय गले के विकार, प्रतिश्याय, कास और अतीसार की उत्तम औपधि है। खांसी और छाती के विकारो में निम्न चूर्ण प्रसिद्ध घरेलू दवा है—तुलसी बीज, गिलोय, सोंठ, कटेली की जड़ सब सम भाग मे लेकर चूर्ण बनाएँ। इसकी मात्रा आधा माशा है।

ताजे पत्ते सुलभ न हों तो पत्तो को तोड़ कर अच्छी तरह सुखा कर रख लिया जाता है और ये कषाय, वटी तेल आदि

विभिन्न योगो मे अकेले या अन्य द्रव्यो के साथ प्रयुक्त किये जाते हैं। चूर्णित शुष्क पत्र प्रतिश्याय और नासाकृमि मे नस्य के रूप में दिये जाते हैं। शिरोविरेचनीय द्रव्यो मे चरक ने तुलसी का परिगणन किया है (सूत्रस्थान, अ० २, श्लोक ४)। तुलसी-पत्र कल्क, कण्टकारी 'मूल, दन्तीमूल, 'वच, शोभाजन, पिप्पली, सेंधानमक, कालीमिर्च और सोठ से विधिपूर्वक सिद्ध किये तेल को प्रतिश्याय मे प्रयोग करने के लिए चक्रदत्त सिफारिश करता है। (नासा-रोग, चिकित्सा श्लोक ।५)। प्रवाहिका और अजीर्ण मे एक तोला ताजे पत्तो का रस प्रतिदिन प्रातःकाल लेने से लाभ होता है। पत्तो का फाट दीपक के रूप मे बच्चो के आमाशयिक रोगो और यकृत् में दिया जाता है। बच्चो को उदर-शूल मे ताजा रस दिया जाता है। 'ताजा रस वमन को रोकता है और कहा जाता है कि आँतों के कीडो को भी मारता है। वमन में निम्नलिखित वटी लाभदायक समझी जाती हैं—तुलसी के पत्ते, वेर की गुठली, और खाण्ड प्रत्येक ३ माशा, काली-मिरिच एक माशा, पानी के साथ मर्दन करके वेर जितनी वड़ी गोलियाँ वनाए। गौ के दूध के साथ बोजो को घोट कर वमन और अतिसार मे दिया जाता है, विशेषकर वच्चो के लिए। एक साल के वच्चे के लिए वीजो की मात्रा २ से ३ ग्रेन है और यह दिन मे तीन या चार वार दो जा सकती है। दोपहर के भोजन के वाद या किसी भी समय तुलसी के चार पॉच पत्ते प्रतिदिन चवा कर रस अन्दर लेना मन्दाग्नि, वमन और क़ै के लिए

लाभकारी है। इससे मुख की दुर्गन्ध दूर होती है, श्वास स्वच्छ होता है और पाचन यंत्र ठीक काम करता है।

एक तोला तुलसी के पत्तों के रस के साथ थोडी सी काली-मिरिच मिला कर श्लैष्मिक ज्वरों और सतत ज्वरों की अवस्था में दिया जाता है। कुम्भी के फूलो और तुलसी के पत्तों का काली-मिरिच के साथ बनाया कषाय कोंकण में सतत ज्वरों मे दिया जाता है। पुरातन ज्वर में एक तोला पत्र स्वरस प्रतिदिन प्रातः-काल लने मे लाभ होता है। मलेरिया ज्वरों मे मूल का कषाय स्वेदक रूप में दिया जाता है। मलेरिया मे पत्तों का फॉट भी देते हैं। तुलसी की विशिष्ट गन्ध के कारण इसके पास मच्छर नहीं आते इसलिए घरों मे या घरों के आसपास इसके पौधे लगाने से मलेरिया के मच्छरों का घर मे प्रवेश कम होता है और मलेरिया से बचने में सहायता मिलती है। रात को बिस्तर पर जाने से पूर्व मुख तथा बिना ढके नग्न भागों पर तुलसी के पत्तों को मल कर सोने से मच्छर दूर रहते हैं। कुछ पत्ते और छोटी छोटी शाखाए बिस्तर में रख कर सोने से मच्छरों के आक्रमण और इसके हानिकारक प्रभाव को रोकने में सहायता मिलती है।

तुलसी पोषक और वाजीकरण गुण के लिए भी उपयोग की जाती है। थोड़ी सी इलायची और समभाग सालममिश्री के चूर्ण के साथ पत्तों का कषाय प्रतिदिन लिया जाय तो यह एक पोषक वृष्य पेय है। इसके बीज लेसदार और लेपक होते हैं और

उत्पादक अंगों तथा मूत्र संस्थान के विकारों में दिये जाते हैं। तुलसी बीज पाँच भाग, मुसली चार भाग और मिश्री छः भाग का मिश्रित चूर्ण, डेढ़ माशा की मात्रा में, वीर्य की निर्बलता में दिया जाता है।

चरक के विष चिकित्सा अध्याय में तुलसी का कई स्थानों पर उल्लेख आता है और इसे जन्तुघ्न तथा विषघ्न गुण दिये जाते हैं। ततय्ये आदि छोटे जानवरों के विष-प्रभाव को कम करने के लिए इसका उपयोग होता है। इस स्थान पर पत्तों को रगड़ दिया जाता है। ताजे पत्ते, फूलों की मंजरी और सूक्ष्म जड़ों का स्वरस सर्पदंश में विष उतारने के लिए प्रयुक्त होता है। बिच्छू के विष में भी यह उपयोगी समझी जाती है।

व्रणों पर से कृमियों को हटाने के लिए पत्तों का शुष्क सूक्ष्म चूर्ण छिड़का जाता है। पत्तों के कषाय या फांट से व्रणों को धोना भी लाभदायक होता है। दद्रु और त्वचा के रोगों में इसका रस त्वचा पर लगाया जाता है। पत्तों का नीबू के साथ कल्क बना कर भी दद्रु पर लेप किया जाता है। पत्तों का रस हलका गरम करके कान में डाला जाय तो कर्ण-वेदना को शान्त करता है। इसका प्रयोग पीवयुक्त और दुर्गन्ध वाले कानों के लिए भी किया जाता है। कई धातुओं की भस्म बनाने और विभिन्न प्रकार की वटी या रस वटियों में इसके पत्तों के रस से भावना दी जाती है।

तुलसी-चिकित्सा

तुलसी जी के विषय मे वैद्य विचक्षण कविराज श्रीशक्तिचरण विशारद लिखते हैं :—

ऐसा कोई विरला ही हिन्दू होगा जो तुलसी को न पहचानता हो या जिसके घर मे एकाध तुलसी का पेड़ न हो। भारतवर्ष मे प्रायः सर्वत्र ही तुलसी उपलब्ध है। सर्वत्र सुलभ होते भी बहुत कम लोग तुलसी के गुणो से परिचित हैं।

हिन्दू मात्र तुलसी को पवित्र मानते हैं और यही कारण है कि घर-घर में तुलसी के दर्शन होते हैं। पूजा, श्राद्ध, तर्पण, दवा आदि सभी मे तुलसी व्यवहार मे आती है। वैष्णवों को तुलसी से विशेष प्रेम है।

विष्णु भगवान पर तुलसी चढ़ाई जाती है। बिना तुलसी चढ़ाए भगवान विष्णु का पूजन पूरा नहीं होता। तुलसी सत्व गुण को बढ़ाने वाली है। तुलसी सेवन से सत्वगुण की वृद्धि होती है। सत्वगुण के प्रभाव से मनुष्य सयमी और सदाचार-परायण होता है। तुलसी के प्रभाव से तामसिक वृत्तियों का नाश होता है। तामसिक गुण व्याधियो का जन्मदाता है। अतः तुलसी की सेवा से तमोगुण जनित व्याधियाँ शरीर पर अपना प्रभाव नहीं फैला सकतीं।

भगवान के भोग मे जो कुछ भी पदार्थ जाते हैं इन सब पर तुलसीदल छोड़ा जाता है। भगवत प्रसाद पर तुलसी छोड़ देने से यक्ष राक्षसादिको की असह्य दृष्टि नहीं पड़ती।

तुलसी के आस-पास की मिट्टी तक बहुत पवित्र मानी जाती है। सक्रामक रोग के कीटाणुओ का नाश करने और सफाई के लिये गॉवो मे लोग अपने घरों को गोबर से लीपते हैं, किन्तु तुलसी के आस-पास की मिट्टी इतनी पवित्र समझी जाती है कि वहॉ गोबर से लीपने की आवश्यकता नहीं समझी जाती। पेड़ के नीचे जहॉ-जहॉ तुलसी के पीले पत्ते गिरते है, वह जगह पवित्र समझी जाती है। बहुत से चर्मरोग तुलसी के नीचे की मिट्टी शरीर पर नित्य लगाते रहने से अच्छे हो जाते हैं।

मृत्यु के समय मुमूर्षु व्यक्ति को तुलसी की छाया मे लिटाते हैं। मृत व्यक्ति के कल्याण के लिये मृत शरीर पर तुलसी की पत्ती और जडे आदि रखी जाती हैं।

पीने के पानी मे दो चार तुलसीदल छोड़ने से जल दोष-शून्य और स्वादिष्ट हो जाता है। वैष्णव लोग बिना तुलसी छोडे जल नहीं पीते। तुलसी को माला धारण करने से शरीर और मन पवित्र होते हैं। शरीर-शुद्धि के लिये निम्नलिखित शास्त्र का श्लोक ध्यान देने योग्य है—

त्रिकालं विनता पुत्र प्राशयं तुलसी यदि।
विशिष्यते कायशुद्धिश्चान्द्रायण शतं विना॥

अर्थात्—हे वैनतेय! तीनों सन्ध्याओं में तुलसी भक्षण करने से सैकड़ों चान्द्रायण व्रत से होने शुद्ध वाली काया शुद्धि होती है।

तुलसी गन्धमादाय यत्र गच्छति मारुतः।
दिशो दशश्च पूतास्युर्भूत ग्रामश्चतुर्विधः॥

जहाँ कहीं तुलसी की गन्ध लिये हुए वायु पहुँचता है वह दिशा और उस दिशा के रहने वाले प्राणी और जनपद सभी पवित्र हो जाते हैं।

महाप्रसाद जननी! सर्वसौभाग्य वर्द्धिनी।
आधि व्याधि हरिर्नित्यं तुलसित्वं नमोस्तुते॥

हे तुलसी, आप मुझ पर प्रसन्न होकर लक्ष्मी, कीर्ति, यश, आयु, सुख, बल, पुष्टि और धर्म प्रदान करें।

या दृष्ट्वा निखिलाघसंघशमनी स्पृष्टा वपुः पावनी।
रोगानामभिवंदिता निरशिनी सिक्तान्तक त्रासिनी॥
प्रत्यासत्ति विधायिनी भगवतः कृष्णस्य संरोपिता।
न्यस्तातच्चरणे विमुक्ति फलदा, तस्यै तुलस्यै नमः॥

जिसकी दृष्टि मात्र से ही सब पाप नष्ट हो जाते हैं, स्पर्श करने से जो पवित्र कर देती है, जिसके सेवन से सब रोग नष्ट होते हैं, जिसके जल से सींचने से यम का त्रास नष्ट होता है, जिसके लगाने से भगवान की सायुज्यता प्राप्त होती है। भगवान

कृष्ण क चरणों मे जिसे चढ़ाने से मुक्ति मिलती है ऐसी तुलसी को हम प्रणाम करते हैं।

सर्वौषधि रसेनैव पुराह्यमृतमन्थने।
सर्वसत्वोपकाराय विष्णुना तुलसी कृता॥

प्राणीमात्र के कल्याण के लिये समुद्र-मन्थन के समय भगवान विष्णु ने तुलसी को उत्पन्न किया।

एक अंग्रेज एलेक्ट्रिक ऐनजिनियर के तुलसी के सम्बन्ध में अनुभव और विचार नीचे लिखे जाते हैं :—

'चिकित्सा प्रकाश नामक' पत्रिका मे श्री नलिनीनाथ मजुमदार लिखते हैं। मेरे एक मित्र अपने घर में वैद्युतिक लौह दण्ड (lightning rod) लगाना चाहते थे, अतः सलाह लेने के लिये वे कलकत्ते के चीफ़ एंजिनियर के घर पर गये। उनके बंगले पर जाकर उन्होंने देखा कि हर एक गमले मे तुलसी के सिवाय और कोई पेड़ नहीं है। अन्य फूल पत्तो के पेड़ो का सर्वथा अभाव देख कर हमारे मित्र ने विस्मित होकर साहब से पूछा, कि सिवाय तुलसी के और कोई वृक्ष आपके यहाँ क्यो नहीं हैं? साहब ने कहा कि आप हिन्दू होकर तुलसी के गुण नही जानते और 'इतनी तुलसी मैंने क्यों लगाई वाला' आपका प्रश्न बड़ा विचित्र है। इस पर मेरे मित्र ने लज्जित होकर कहा कि हम हिन्दुओं के यहाँ तुलसी रखने की प्रथा थी किन्तु अब अंग्रेजी पढ़ने से हम ... तुलसी का आदर करना भूल गये।

इसलिये आप ऐसे वैज्ञानिक का तुलसी पर मत जानने के लिये हम उत्सुक हैं। इस पर साहब ने कहा कि आपके यहाँ क्या तुलसी के गुणों पर कोई पुस्तक नहीं है। मेरे मित्र ने कहा कि है तो किन्तु आजकल हिन्दू लोग शास्त्रों के वचन की अपेक्षा साहबों के वचन की कद्र ज्यादा करते हैं। इसलिये हम आपका मत जानना चाहते है। इस पर साहब ने कहा, जितनी बिजली तुलसी मे है उतनी ससार के किसी वृक्ष मे नहीं है। तुलसी के आसपास दो सौ गज तक का जलवायु शुद्ध रहता है। तुलसी के पास रहने से प्लेग, थाइसिस मैलेरिया आदि रोगों के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। मैं अपनी कमर मे तुलसी की लकड़ी का एक टुकड़ा तागे से बाँध कर बराबर रखता हूँ जिसके प्रभाव से किसी भी रोग के कीटाणु मेरे शरीर मे प्रविष्ट नहीं हो सकते। तुलसी से शरीर की बिजली सम भाव मे रहती है इसीलिये सवेरे और शाम मैं बराबर अपने तुलसी के बगीचे मे घूमा करता हूँ। इसी के प्रभाव से कलकत्ते ऐसे रोगपूर्ण शहर मे रह कर भी मैं बराबर स्वस्थ रहता हूँ। आशा है आप भी तुलसी के गुणों को जान कर अपने घरो में तुलसी लगावेंगे। जो लोग शास्त्रो पर विश्वास नहीं करते जो अङ्गरेजों की वाणी को ही प्रामाणिक मानते हैं आशा है उक्त ऐन्जीनियर की बात पर विश्वास करके ही लोग तुलसी से लाभ उठावेंगे।

तुलसी के भेद

तुलसी की कई जातियाँ हैं। साधारणतया सभी तुलसी के

ही नाम से प्रसिद्ध हैं। तुलसी के नाम हैं विष्णुवल्लभा, सुरभि, सुगन्धा, तीव्रा, गन्धहारिणी, सुलभा, ग्राम्या, बहुमञ्जरी, बहुपत्र, सुरसा, कुठेरक, हरिप्रिया, वृन्दा, पुण्या, पवित्रा, पावनी, सुभगा, अमृता, देवदुन्दुभि।

तुलसी के भेद सुरसा (श्वेत व कृष्ण अर्थात् रामा और श्यामा तुलसी) बहुमञ्जरी। अङ्गरेजी में इसे Holy Basil, डाक्टरी मे Olymum Sanctum कहते हैं। (२) कुठेरक अथवा अर्जकत्रय। पर्णास, क्षुद्रपत्र विश्वगन्धक Ocymum Villosum (३) मरुवक फणिज्झक, ग्रन्थपुष्प, गन्धपत्र, खरपत्र बहुवीर्य। Ocymum Gratissimum (४) बर्बरीतुवरी खरस्पर्शी अन-गन्धिका। हिन्दी मे ममरी—Ocmum Pilosum Ronl (५) वन बर्बरिका-सुमुख, सुगन्धि, कटुपत्र, सूक्ष्मपत्रक। Ocymum caryshyllatum (६) दमनक-दान्त मुनिपत्र गन्धोत्कटः हिन्दी मे दौना कहते हैं।

तुलसी के गुण

१ सुरसा (श्वेत कृष्ण तुलसी) का गुण प्रायः एक ही है। कृष्णा तुलसी में कफनाशक गुण विशेष है। श्वेत तुलसी मे वायुनाशक गुण विशेष है। दोनों पित्तकारक हैं। भूतदोष नाशक, दुर्गन्धिनाशक, विषनाशक, कास, श्वास, ज्वर, पार्श्वशूल (प्लूरिसी) हिक्का (हिचकी) नाशक।

कुठेरक—(अर्जकत्रय) कफ और वातनाशक पित्तकारक। सुगन्धि रुचिकारक। स्थावर और जगम विषनाशक (स्थावर

जैसे सांप विच्छू आदि का विष (जंगम) जैसा सिंगिया, कुचला आदि) चक्षु रोग नाशक। रक्तदोष, कुष्ट कृमि नाशक। सुख प्रसव कारक।

३—मरुवक—कफ और वात कारक। पित्तोत्पादक। अग्नि-दीपक, आमपाचक। सुगन्धि रुचिकारक, विष नाशक। अग्नि-मान्द्य, अरुचि, ज्वर, श्वास, मल विबन्ध, शोथ, हृद्रोग, अफरा-शूल, रक्तदोष, कुष्ट, चर्म-रोग, कडु नाशक।

४—बर्बरी—कफ और वात नाशक, विष नाशक, रक्तदोष, कृमि कण्डू नाशक। पित्त कारक।

५—वन बर्बरिका—कफ वातघ्न, सुगन्धि अग्निदीपक, पित्त कारक, रुचिकारक। निद्रा नाशक, दाह जनक। भूतबाधा नाशक, दुष्ट ग्रह नाशक। ज्वर, कृमि, रक्तदोष, शोथ, मूत्रकृच्छ्र-कुष्ट, दद्रु, चर्मरोग कडू नाशक। वन बर्बरिका (बीज) दाह शोपनाशक।

६—दमनक—त्रिदोष नाशक, सुगन्ध, शुक्रवर्द्धक, विष नाशक। संग्रहणी-विस्फोटक कुष्ट कडू, क्लेद नाशक।

४ तुलसी के रस का रोगों पर प्रयोग

१—सुरसा का रस शहद के साथ चाटने से जुखाम और जुखाम मे उत्पन्न ज्वर मे विशेष लाभ करता है। चाय का तीन चम्मच भर पुरुषो के लिये पूरी मात्रा है। और बच्चो के लिये एक चम्मच है। कफ जनित खाँसी मे कृष्ण तुलसी का रस शहद के साथ चाटने से बहुत लाभ होता है। बच्चों के रोग को जैसे ज्वर,

जुखाम, पसली चलना आदि में शहत के साथ तुलसी का रस चाटने से बहुत लाभ होता है। पसली ज्यादा चले तो थोडा सा सेंधा नमक मिलाकर देने से कै होकर आराम हो जाता है। तुलसी के रस के प्रयोग से अफरा और मल-बद्धता को भी लाभ पहुँचता है। वातरेक्त कुष्ट, दूषित रक्त को शोधने में भी यह रस बहुत लाभकारक है। रस में काली मिर्च मिला कर खाने से कफ खाँसी नष्ट होती हैं।

वज्राहत अर्थात् बिजली या चिर्री से आहत व्यक्ति के शरीर पर तुलसी का रस लगाने से बिजली की क्रिया प्रवाहित होकर ज्ञान का संचार होता है।

२—तुलसी का रस शरीर पर लगाने से मच्छर नहीं काटता।

३—तुलसी के रस में सेंधा नमक घोल कर लगाने से दाद अच्छी हो जाती है।

४—बर्रे के काटे पर रामा तुलसी के रस को लगाने से लाभ होता है।

५—रामा तुलसी का रस वात व्याधि पर लगाने से लाभ होता है।

६—पीनस रोग में बर्वरी (मसूरिका) के रस में रत्ती भर कपूर मिला कर नास लेने से तीन दिन में नाक से कीडा गिर जाता है और सात दिन में रोग बिलकुल अच्छा हो जाता है।

पत्तों के उपयोग

१—प्रतिदिन चार-पाँच तुलसी की पत्ती खाने से कफ की शिकायत कम हो जाती है।

२—नित्य तुलसी खाने से कुष्ट अच्छा हो जाता है।

३—सवेरे और शाम दोनों समय तुलसी की पत्ती खाने से शरीर की कान्ति बढ़ती है। तुलसी उत्कृष्ट रसायन है।

४—पत्ती सहित तुलसी की डाल रखने से मच्छर नहीं आते।

५—तुलसी की पत्ती ११ और ९ दाना काली मिर्च पानी में पीस कर रख लो। एक मिट्टी का प्याला आग में गरम करके लाल कर लो तब उसमें छनी तुलसी का रस डाल कर छौंक दो। इस छौंके तुलसी के जल को नित्य पीने से कास समेत ज्वर नष्ट हो जाता है।

६—सेंधे निमक के साथ तुलसी की पत्ती पीस कर लगाने से दाद आराम होती है। इसमें थोड़ा नीबू का रस डालने से और लाभ होता है।

७—तुलसी की पत्ती से सिद्ध तेल लगाने से कर्णशूल और पीनस आराम होता है।

८—तुलसी की पत्ती के साथ काली मिर्च और सोंठ सेवन करने से पुराना ज्वर अच्छा होता है।

९—तुलसी की पत्ती ७, वेल की पत्ती ३, हरसिंगार की पत्ती १, और ३ दाना मिर्च पीस कर सेवन करने से मलेरिया ज्वर अच्छा होता है। दिन मे तीन वार सेवन करना चाहिये।

१०—वर्वरी (ममरी) की डाल समेत पत्ती घर मे रखने से छछूंदर और मच्छर नहीं आते· विस्तर में रखने से खटमल भाग जाते हैं।

मूल के प्रयोग

१—स्वप्नदोष नाशक—स्वप्नदोष जनित शुक्र क्षय और शरीर दुवला होने से श्यामा तुलसी की जड़ और एक माशा काली मिर्च, दो तीन दिनतक सेवन करने से विशेष फल होता है।

२—तुलसी का मूल १ माशा भर पान के साथ सेवन करने से वीर्य स्तम्भन होता है।

३—कुठेरक अथवा छोटे पत्तो वाली तुलसी का मूल जल में पीस कर गोली वना ले। विच्छू के काटे पर इस गोली के रगड़ देने से ज्वाला शान्त हो जाती है।

४—तुलसी का मूल धारण करने से वज्राघात (अशनिपात या चिर्री) का भय नहीं रहता।

पुराने समय में लोग मकान वनवाते समय नींव मे एक घड़े के अन्दर हल्दी से रँगे कपड़े में तुलसी की जड़ रखते थे। इसके प्रभाव से उस घर पर कभी वज्राघात नहीं होता था।

तुलसी की जड़ की मिट्टी मे भी तुलसी का ही गुण होता है। वहुत से कठिन रोग इस मिट्टी से अच्छे हो जाते हैं।

वीज

१—एक माशा तुलसी की मंजरी मे दो छोटी इलायची के दाने डाल कर चाय की तरह वना कर पीने से शिर का दर्द और जुखाम अच्छा होता है।

वरावर जुखाम होने वाले को इसका नित्य सेवन करने से वड़ा लाभ होता है।

वर्वरी का वीज जिसे तुखमलंगा भी कहते हैं

१—इसके वीज को पानी मे भिगो कर सेवन करने से शुक्र मेह अर्थात् पेशाव मे धात जाना वन्द हो जाता है।

२—ममरी के वीज को फोड़ा पर वॉधने से या तो वैठ जाता है या फूट कर वह जाता है।

(२)

हाल ही में डाक्टर पी० न० कानवार जी ने तुलसी के चमत्कार पर प्राकृतिक चिकित्सा के मासिक-पत्र जीवन-सखा मे इन शब्दो का प्रयोग किया है—"तुलसी वृक्ष हिन्दू घरो की शोभा है, धार्मिक दृष्टि से इस पौधे को वड़े महत्त्व का स्थान प्राप्त है। विना तुलसी के सृष्टि की रक्षा और पालन करने वाले भगवान् विष्णु की पूजा पूरी नहीं होती, इसकी पौराणिक कथा भी है। आस्तिक हिन्दू घरों की स्त्रियॉ इस पौधे को वड़ी श्रद्धा के साथ पूजा करती हैं

लेकिन तुलसी केवल पूजा की ही चीज़ नही, पूजा उसी की जगत मे होती है जिससे जनता का कल्याण होता है। तुलसी की असाधारण उपयोगिता, इसके आश्चर्यजनक लाभ ने ही इसे पूजनीय बना दिया है। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि इसके गुणों से अच्छी तरह परिचित थे और इसलिये इसको इतने महत्त्व का स्थान दे दिया। खेद की बात है कि आजकल के समय में लोग इसकी अनुपम उपयोगिता को भूलते जा रहे हैं और तुलसी इन दिनों कुछ थोडे ही घरो मे पूजा की वस्तुमात्र बन रही है।

तुलसी का पौधा साधारणतः मार्च से लेकर जून तक लगाया जाता है, सितम्बर और अक्टूबर मे यह फूलता है और जाडे के दिनो मे इसके बीज पकते हैं, बारहो महीने यह पौधा हरा-भरा रहता है। पत्तियाँ, बीज, जड और डठल इसके सभी अंग औपधि का काम देते हैं।

इसकी जड ज्वर का प्रकोप शान्त करने वाली, इसका बीज वीर्य को गाढ़ा बनाने वाला तथा शान्तिदायक होता है। इसका सूखा हुआ पौधा पाचन-शक्ति बढ़ाने मे अद्वितीय गुण रखता है। इसकी पत्तियो से कुछ पीलापन लिये हुए हरे रंग का तेल निकलता है, अगर उस तेल को कुछ समय तक रख दिया जाय तो वह जम जाता है और रवादार हो जाता है। यह बड़ा ही गुणकारी है।

तुलसी मलेरिया-निवारक है और मच्छर इससे दूर भागते हैं उसको "वन तुलसी" कहते हैं। यदि तुलसी के दो-चार पत्ते

नित्य चबा लिये जायँ तो उससे सभी तरह के ज्वरों और खास कर मलेरिया के प्रकोप से बचाव होता है।

तुलसी-पत्र में इस प्रकार की गन्ध है जिससे मच्छर और कीडे उस स्थान पर नहीं रह सकते। जिस स्थान में तुलसी का वृक्ष रहता है वहाँ सर्प भी नहीं टिक सकते, तुलसी वृक्ष की सुगन्धि वातावरण को शुद्ध करने वाली होती है। यूरोप के डाक्टरों ने भी यह कहा है कि मलेरिया को दूर रखने के लिये तुलसी-पत्र से उत्तम और साथ ही सस्ती दूसरी औषधि नहीं है।

यदि दो-चार तुलसी की पत्तियाँ काली मिर्च के साथ घोट कर खाई जायँ अथवा जाडे के दिनों में उसे काली मिर्च के साथ उबाल कर पिया जाय तो मलेरिया का रोग दूर हो जाता है। तथा अन्य प्रकार के भी बुखार जाते रहते हैं।

अगर चिकित्सक तुलसी का ठीक उपयोग जानता है तो तुलसी क्षय रोग से भी छुटकारा दिला सकती है।

तुलसी के काढ़े मे थोड़ी सी मिश्री और गाय का दूध मिलाकर पीने से थकावट मिटती है और सर्दी व खाँसी दूर हो जाती है।

नींबू के रस के साथ तुलसी की पत्तियों का सेवन करने से चर्म-रोग दूर होते हैं, चेहरे पर पडे हुए काले धब्बे (झॉई) दूर होते हैं। तुलसी का तेल फोडे, तथा पीठ के फोडे यानी (Carbuncle) खुजली आदि के लिए लाभदायक है, तुलसी के तेल से पीव देने वाले भारी घाव भी अच्छे होते हैं, यहाँ तक कि ग र्मी (Syphlıs) के रोगी भी इससे लाभ उठा सकते हैं।

सर्प के विष को भी दूर करने मे तुलसी एक रामवाण औषधि है, साँप काटने पर फौरन् ही रोगी को दो-चार पत्तियाँ खिला देनी चाहिये। इसके उपरान्त दो तोला तुलसी की जड़ अथवा एक तोला पत्ती काली मिर्च के साथ खौलते पानी मे मिला कर पिला देना चाहिये। ऐसा करने से बेहोशी कम हो जायगी। काटी हुई जगह पर तुलसी की जड को घिस कर मक्खन के साथ मिला कर उसकी पट्टी लगा देनी चाहिये। पट्टी का रग काला होते ही फौरन बदलते रहना चाहिये, जब तक उसका रग सफेद न देख पडे, तब तक इसी क्रम से पट्टी बदलता जाय। विष अन्त में उतर जायगा।

स्त्री-पुरुष सम्बन्धी अन्य बीमारियों के भी दूर करने में तुलसी सहायक होती है। स्त्रियों के लिये प्रसूति ज्वर मे तुलसी का सेवन बड़ा लाभदायक होता है।

पुरुषों के लिये तुलसी का बीज, वीर्य को गाढ़ा बनाने वाला तथा शान्तिदायक होता है। वीर्य बढ़ाने के लिये १८ ग्रेन तुलसी के बीज को ३६ ग्रेन पुराने शीरे (Molasses) मे मिला कर सुबह शाम गाय के ताजे दूध के साथ सेवन करना चाहिये।

ऐसा गुणकारी पौधा घर-घर मे अगर पूजा जाय तो आश्चर्य ही क्या है। ऐसी सस्ती औषधि सुलभ और सुगम अन्य देश को नसीब नहीं। खेद का विषय है कि हमारे बन्धुवर ऐसी अमूल्य वस्तु का सेवन छोड़कर विदेशी औषधियो के सेवन मे अपना धन फूँकते हैं और लाभ के स्थान में हानि उठाते हैं।"

... ...

तुलसी के विषय मे आयुर्वेदीय मत तथा डाक्टरो के अनुभव एव तुलसी के भिन्न-भिन्न प्रकार और तत्सम्बन्धी फल, तथा तुलसी के अनेक सार्थक नाम ज्ञान-विज्ञान की रीति से पाठको की जानकारी के लिये उपस्थित कर दिये गये हैं। अब केवल आध्यात्मिक प्रयोग रह जाता है। वह भी तुलसी-पूजन-विधान अर्थात् 'षोडषोपचार' पूजन स्तुति, स्तोत्र, कवच, गीत तथा वरदान और मङ्गल-कामना का पूर्ति के हेतु अगले पृष्ठो मे लिख दिया जाता है। शान्तमन, एकाग्र चित्त होकर विधानपूर्वक अनुष्ठान करके मनोवृत्ति को शक्तिपूर्ण कर इसका फल प्रत्येक प्राणी उठा सकता है। विशेष कर आर्य महिलायें जो भक्ति और श्रद्धा की मूर्ति सी घर-घर में विद्यमान हैं, यदि वे कृपा करके तुलसी जी का पूजन लिखी हुई रीति पर करेंगी तो विश्वास है कि परमात्मा उनकी मनोकामना सिद्ध करेंगे।

स्मरण रहे-कि पूजा और उपासना बिना श्रद्धा और विश्वास के, एव गुण और महिमा के ज्ञान के बिना विशेष चमत्कार दिखलाने वाली नहीं होती इसलिये तुलसी की महिमा और गुण भिन्न-भिन्न प्रकार की तुलसी को विशेषता दिखला कर अब आगे पूजन की विधि लिख देता हूँ और आशा करता हूँ कि श्रद्धालुगण श्रीतुलसी जी का यथोचित व्यवहार कर लाभ उठावेंगे।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

तुलसी पूजन विधि

गङ्गा, तुलसी, 'सालिग्राम ही हिन्दू के घर की शोभा हैं, इनके विधि पूर्वक भावपूर्ण पूजन से नर-नारी का कल्याण होता है, यह वात सर्वमान्य है। 'कोनसेवेत मरिष्य मानः'

"महात्म"

"स्नान, जागरण, दीपं, तुलसी वन पालनम्।
कुर्वन्ति कार्तिके मासे ते नरा विष्णु मूर्तयः॥" १
त्प्तिभ्यस्तत्र वीजेभ्यो वनस्पतयस्त्रयोऽभवन्।
धात्री च, मालती चैव, तुलसी च नृपोत्तम। २
धात्र्युद्भवा स्मृता धात्री, मा भवा मालती स्मृता,
गौरी भवा च तुलसी, तमः-सत्व-रजो गुणाः। ३
तुलसी कानन राजन्! गृहे यस्यावतिष्ठते।
तद् गृह तीर्थ रूप तु नायन्ति यम किंकरा.। ४
सर्व पापहर नित्यं कामद तुलसीवनम्,
रोपयन्ति नराः श्रेष्ठास्ते न पश्यन्ति भास्करिम्। ५
दर्शन नर्मदायास्तु गगा स्नान तथैव च,

तुलसी वन संसर्गः समनेव त्रयं स्मृतम्।
रोपनात् पालनात् सेकाद् दर्शनात्स्पर्शनान्नृणाम्।
तुलसी दहते पापं वाङ् मनः काय सञ्चितम्। ७
तुलसी मञ्जरीभिर्यः कुर्यात्को हरि र्चनम्,
न स गर्भ गृहं याति मुक्ति भागी न संशयः। ८
पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा,
वासुदेवादयो देवास्तिष्ठन्ति तुलसी दले। ९
तुलसी मञ्जरी युक्तो यस्तु प्राणान् विमुञ्चति।
यमोपि नेक्षितुं शक्तो, युक्तं पाप शतैरपि। १०
विष्णोः सायुज्य मायोति सत्य सत्य नृपोत्तम।
तुलसी काष्ठजं यस्तु चन्दनं धार्यते नरः, ११
तद् देहं न स्पृशेत् पाप क्रियामाणमपीह यत्।
तुलसी विपिनच्छाया यत्र यत्र भवेन्नृप। १२

महिमा सूचक इन श्लोकों की पंक्तियों दिखला के अब षोड़षो-पचार तुलसी पूजन विधि लिख देता हूँ। श्रद्धा भक्ति समन्वित होके विधिपूर्वक अनुष्ठान करने का अधिक फल होगा। नियम से समय पर श्रद्धापूर्वक पूजन, करने से अभीष्ट सिद्ध होता है।

अथ तुलसी पूजा योगः

आचमन—केशवाय नमः, नारायणाय नम, माधवाय नमः। इति पिबेत्।

हस्त प्रक्षालनम्—गोविन्दाय नमः (करंप्रक्षाल्य) विष्णवे नमः इतिनेत्रयो रङ्गस्पर्शनम्।

मंगलोच्चारणम्—श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । श्रीलक्ष्मी-नारायणाभ्या नमः। श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्य-गर्भाभ्या नमः। शचीपुरन्दराभ्या नमः। कुल देवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः। पतिचरणाभ्या नमः। सर्वेभ्यो-देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्योब्राह्मणेभ्योनमो नमः। निर्विघ्न मस्तु। पुण्य पुण्याह दीर्घमायुरस्तु।

मंगलदेवता प्रार्थना

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानिनामानि य. पठेच्छृणुयादपि।
विद्यारम्भे विवाहे च, प्रवेशे, निर्गमे तथा।
संग्रामे, सकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।
शुक्लाम्बरधरं विष्णुं, शशिवर्णं, चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये—
अभीप्सितार्थे सिद्धर्थं पूजितोयः सुरासुरैः।
सर्व विघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।
सर्व मंगलमांगल्ये, शिवे, सर्वार्थ साधके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि नमोस्तुते।
सर्वदा सर्व कार्येषु नास्तितेषाममंगलम्।

येषा हृदिस्थो भगवान् मगलायतनो हरिः।
तदेवलग्न सुदिनतदेव तारावल चन्द्रवल तदेव।
विद्यावल सर्ववल तदेव, लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।
लाभस्तेषा जयस्तेषा, कुतस्तेषा पराभवः।
येषां इन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।
विनायक गुरु भानु ब्रह्माविष्णु महेश्वरन्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्व कार्यार्थ सिद्धये।
यत्र योगेश्वर. कृष्णो यत्रपार्थो धनुर्धर·।
तत्र श्रीविजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा-दिशन्तिनः सिद्धि ब्रह्मेशानजनार्दनाः।

सकल्पः—विष्णवे नमः। विष्णु र्विष्णु र्विष्णु. श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणः द्वितीये परार्धे श्री श्वेत्त वाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलि युगे कलिप्रथम चरणे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे, विष्णु प्रजापति क्षेत्रे, तीर्थराजे प्रयागे (सवत्सरायन, ऋतुमास, पक्ष, तिथि, वासर, नक्षत्र, योग, प्रातः कालादिनामान्यनुकीर्य) ममात्मनः पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं तथा च मम भर्त्रासह अखण्डित सुख सौभाग्य सन्तत्यायुरारोग्यैश्वर्यादि वृद्धि द्वारा श्रीतुलसी देवता प्रीत्यर्थ वृन्दावने तुलसी पूजन महङ्करिष्ये।

कलशपूजनम्—गगे च यमुनेचैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु।

कलशस्य वरुण देवतायै नमः ।
सकल पूजा परिपूरणार्थे गधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।
नमस्करोमि ।

अस्मिन्कलशे सर्वाणि तीर्थानि आवाहयामि ।
स्थापयामि, कल्पयामि, नमस्करोमि ।

पूजाद्रव्य प्रोक्षणम्—अपवित्रः, पवित्रोवा सर्वावस्थांगतोपिवा ।
यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।

घन्टा पूजनम्—आगमार्थं च देवाना गमनार्थं च रक्षसाम् ।
कुरु घण्टे महानाद, देवतार्चन सनिधौ ।
घण्टास्थ गरुड़ देवतायै नमः, सकल पूजा परिपूरणार्थे ।
गध पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ।

दीप पूजनम्—दीपस्त्व ब्रह्म रूपोसि ज्योतिपा प्रभुरव्ययः ।
सौभाग्यं सुख पुत्राश्च सर्वान्कामाश्च देहिमे ।
दीप देवताभ्यो नमः, सकल पूजा परिपूरणार्थे ।
गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ।

ध्यानम्—ध्यायेच्च तुलसीं देवीं श्यामा कमल लोचनाम् ।
प्रसन्ना पद्मवदना, वराभय चतुर्भुजाम् ।
किरीट-हार-केयूर-कुण्डलादि-विभूपिताम् ।
धवलांकुश सयुक्ता पद्मासननिपेविताम् ।
प्रिया च सर्वदा विष्णोः सर्व देव नमस्कृताम् ।
श्रीतुलस्यैनमः । ध्यायामि

আবাহনম্—দেবি ত্রৈলোক্য জননি সর্ব লোকৈক পাবনি।
আগচ্ছ বরদে মাতঃ প্রসীদ তুলসি প্রিয়ে।
শ্রীতুলস্যৈ নমঃ। আবাহয়ামি।

আসনম্—সর্ব দেবময়ে দেবি সর্বদা বিষ্ণু বল্লভে,
দেবি স্বর্ণময় দিব্য গৃহাণাসন মব্যয়ে।
শ্রীতুলস্যৈ নমঃ। আসনার্থে অক্ষতান সমর্পয়ামি।

পাদ্যম্—সর্বে দেবা যথা স্বর্গে তথাত্র ভুবি সর্বদা,
দত্ত পাদ্য গৃহাণেদ তুলসি ত্ব প্রসীদমে।
শ্রীতুলস্যৈ নম। পাদ্য সমর্পয়ামি।

गगा गोदावरी कृष्णा पयोष्याद्यापगास्तथा ।
आयान्तु ताः सदा देव्यम्तुलसी स्नान कर्मणि ।
श्रीतुलस्यै नमः । मलापकर्षण स्नानं समर्पयामि ।

पचामृतस्नानम्—पचामृत मयानीत पयोदधि घृत मधु ।
सहशर्करया देवि स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ।
श्रीतुलस्यै नम. । पचामृतेन स्नान समर्पयामि । तदन्ते

शुद्धोदक स्नानम्—तत. आचमन समर्पयामि ।
सकल पूजा परिपूरणार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि
(निर्माल्य । वसृज्य पुनश्च गधाक्षत पुष्पाण्यर्पयित्वा
नन्तर अभिषेक कुर्यात्)

अभिषेक.—कृष्णा, सरस्वती, काली तुङ्गभद्रा शची तथा ।
भागीरथी, पार्वती च, रमा, नारायणी, कृपी,
सुभद्रा द्रोपदी साध्वी माता च वाप्यरुन्धती ।
सावित्री कालिकाऽहिल्या स्नापयिष्यन्तु सर्वदा ।
आभिः कृताभिषेका त्व ददासि गुरु सोभगम् ।
अतस्त्वा स्नापयिष्यामि तुलसि विष्णु वल्लभे !
शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु,
अमृताभिषेकोऽस्तु । श्रीतुलस्यैनम' अभिषेक
समर्पयामि अभिषेकान्ते आचमनीय समर्पयामि ।

वस्त्रम्—क्षीरोदमथनोद्भूते चन्द्र लक्ष्मि महोदरे ।

गृह्यता परिधानार्थं मिद क्षौमाम्बर शुभे ।

श्रीतुलस्यै नमः । वस्त्रं (अभावे अक्षत) समर्पयामि ।

कञ्चुकीमुपवस्त्रं—कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नाना रत्नैः समन्वितम् ।

गृहाण त्व मयादत्त तुलसी भय हारिणी ।

श्रीतुलस्यै नमः । कञ्चुकीमुपवस्त्र समर्पयामि ।

कुंकुमम्—केशरा गुरु संयुक्तं चन्दनादि समर्पितम् ,

कस्तूरिका समायुक्त कु कुमं प्रति गृह्यताम् ।

श्रीतुलस्यै नम. । कु कुम समर्पयामि ।

(क्षेपकम् अक्षतान्)—अक्षताश्च महादेवि, तुलसी सौख्य दायिके ।

अर्पयामि सदा भक्त्या सुख सन्तति लब्धये ।

श्रीतुलस्यै नमः । अक्षतान समर्पयामि ।

सौभाग्यद्रव्यम्—हरिद्रा कु कुमं चैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम् ।

मयानिवेदिते भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ।

श्रीतुलस्यै नमः । सौभाग्यद्रव्य समर्पयामि ।

पुष्पाणि—मलयादीनि सुगन्धीनि माल्यादीनि सत्तमे ।

मयाहृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ।

श्रीतुलस्यै नम । पुष्पाणि समर्पयामि ।

धूपम्—वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध सत्तम ।

आघ्रेय सर्वदेवानाम् धूपोऽयं प्रति गृह्यताम् ।

श्रीतुलस्यैनम. धूप समर्पयामि ।

कर्पूरार्तिक्यम्

नीराजनानि सततं हरिवल्लभायं,
कर्पूर वर्तिभि रलं सुखदायिके त्वाम्।
पादौ भजाम्यविरते तव देविमाये,
वंशाय सौख्य मयि देहि, बलं च पूर्णम्।
श्रीतुलस्यै नमः—कर्पूरार्तिक्य समर्पयामि—क्षेपकम्)

प्रदक्षिणा—यानि कानिच पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे।

मन्त्रः—नमस्ते गार्हपत्यायै नमस्ते दक्षिणाग्नये।
नम आवाहनीयायै तुलस्यै ते नमो नमः।

श्रीतुलस्यै नमः—प्रदक्षिणा समर्पयामि—

मन्त्रपुष्पांजलिः—नमस्कार :—

विष्णु प्रियकरे देवि तुलसी सुखदायिके।
पुष्पाञ्जलिं प्रयच्छामि पते रायुष्य वर्द्धके।
श्रीतुलस्यै नमः—मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

क्षेपकम्—विशेषार्घ्यः—

गंध प्रसून संयुक्तं फलमुद्रादि शोभितम्।
अर्घ्यं ददामि तुलसि तवप्रीत्यै नमो नमः।
श्रीतुलस्यै नमः। विशेषार्घ्यं समर्पयामि—

प्रार्थना

सौभाग्य, सन्तर्ति, देवि ! धन, धान्यं च मे सदा ।
आरोग्य, शोक-शमनं, कुरु मे माधव प्रिये !
अभीष्ट फल सिद्धि च, सदा देहि हरि प्रिये !
देवैस्त्व निर्मिता पूर्वं मर्चिताऽसि मुनीश्वरैः,
अतोमां सर्वदा भक्त्या कृपा दृष्ट्या विलोकय ।
पते रायुष्य, भाग्यं च, सदा देहि हरि प्रिये !
पूतना भय, सत्रासात् दुरितश्च, यथा हरिः ।
तथा ससार संत्रासा द्रक्ष मे वंश सोत्तमम् ।
श्रीतुलस्यै नमः—प्रार्थनां समर्पयामि—

अनेनमया यथा शक्त्या पूजनेन श्रीतुलसी देवता प्रीयता नसम इति—षोड़पोपचार पूजन ॥ पूजन समाप्त करके भक्ति पूर्वक सुस्वर गीत गायन करै—

जै जै श्री तुलसी महरानी—नमो नमो !
छप्पन भोग धरे हरि आगे,
बिन तुलसी प्रभु एक न मानी—नमो नमो !
पूर्व जन्म में जो तप कीन्हे,
भई हरी की तू पटरानी—नमो नमो !
आधि व्याधि दुख नाशिनि माता !
शुभ फल देनि, जगतजन जानी—नमो नमो !
धन सम्पति, सौभाग्य सम्पदा,
विवर्द्धन करति भवानी—नमो नमो !

सुत, सुख, स्वास्थ दायिनी देवी,

दुख दरिद्र हारिनि वरदानी—नमो नमो !

हरि प्रिये ! हरि भक्ति देहु मोहि,

नमत सीस रखु रजा पानी—नमो नमो !

इसके बाद आचमन करके शान्त मन हो, सुखासन से बैठ कर कवच और स्तोत्र का पाठ करें। फिर सद्ब्राह्मणी सुहागिनी को भोजन करावें। यथा शक्य वस्त्र, पात्र, दक्षिणा देकर आशीर्वाद ले तुलसी को दण्डवत करके पूजा समाप्त करे।

अथ तुलसी कवच

श्रीगणेशायनमः। अथ तुलसी कवच स्तोत्र मंत्रस्य श्रीमहादेव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीतुलसी देवता। मनीप्सित कामना सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

तुलसि श्री महादेवि मनः पकज धारिणी।
शिरोमे तुलसी पातु भाल पातु यशस्विनी ॥१॥
दृशौ मे पद्म नयना श्री सखी श्रवणे मम।
घ्राण पातु सुगन्धा मे मुख च सुमुखी मम ॥२॥
जिह्वां मे पातु शुभदा कंठं विद्यामयी मम।
स्कंधौ कल्हारिणी पातु हृदयं विष्णु वल्लभा ॥३॥
पुण्यदा पातु मे मध्यं नाभिं सौभाग्य दायिनी।
कटिं कुंडलिनी पातु ऊरू नारद वंदिता ॥४॥
जननी जानुनी पातु जघे सकल वंदिता।
नारायण प्रिया पादौ सर्वाङ्गं सर्व रक्षिणी ॥५॥

संकटे विपमे दुर्गे भये वादे महाहवे ।
नित्यंहि संध्ययोः पातु तुलसी सर्वतः सदा ॥६॥
इतीद परम गुह्य तुलस्याः कवचामृतम् ।
मर्त्यानाममृतार्थाय भीतानामभयाय च ॥७॥
मोक्षाय च मुमुक्षूणां ध्यायिनां ध्यानयोगकृत् ।
वशाय वश्य कामानां विद्यायै वेदवादिनाम् ॥८॥
द्रविणाय दरिद्राणां, पापिनां पाप शान्तये ।
अन्नाय क्षुधितानां च स्वर्गाय स्वर्गमिच्छताम् ॥९॥
पशव्य पशु कामानां पुत्रदं पुत्रकांक्षिणाम् ।
राज्याय भ्रष्टराज्याना मशान्तानां च शान्तये ॥१०॥
भक्तर्थं विष्णु भक्तानां विष्णौ सर्वान्तरात्मनि ।
जाप्यं त्रिवर्ग सिद्धथर्थं ग्रहस्थेन विशेषतः ॥११॥
उद्यंतं चण्ड किरण मुपस्थाय कृताजलिः ।
तुलसी कानने तिष्टन्नासीनोवाजपेदिदम् ॥१२॥
सर्वान्कामानवाप्नोति तथैव मम सन्निधिम् ।
ममप्रियकर नित्यं हरिभक्ति विवर्धनम् ॥१३॥
यास्यान्मृतप्रजानारी तस्या अगं प्रमार्जयेत् ।
सा पुत्रं लभते दीर्घजीविनं चाप्य रोगिणम् ॥१४॥
वध्याया मार्जये दंगं कुशैर्मंत्रेण साधकः ।
साऽपि संवत्सरादेव गर्भं धत्ते मनोहरम् ॥१५॥
अश्वत्थे राजवश्यार्थी जपेदग्नेः सुरूप भाक् ।
पलाश मूले विद्यार्थी तेजोर्थ्यभिमुखो रवेः ॥१६॥

कन्यार्थी चण्डिकागेहे शत्रुहत्यै गृहे मम।
श्री कामो विष्णुगेहे च उद्याने स्त्रीवशाभवेत् ॥१७॥
किमत्र वहुनोक्तेन शृणु सैन्येश तत्वतः।
यं यं काममभिध्यायेत्तंत प्राप्नोत्यसंशयम् ॥१८॥
मम गेहं गत स्त्वं तु तारकस्य वधेच्छया।
जपेत्स्तोत्र च कवच तुलसीगत मानसः ॥१९॥
मंडलात्तारकं हंता भविष्यति न संशयः।
तस्य सर्वत्र विजयः नात्रकार्या विचारणा ॥२०॥
इति ब्रह्माण्ड पुराणे तुलसी महात्म्ये तुलसी कवच नाम द्वितीयोध्यायः।

श्री तुलसी स्तोत्र

श्रीगणेशायनमः

जगद्धात्रि नमस्तुभ्यं विष्णो श्री प्रिय वल्लभे।
यतो ब्रह्मादयो देवाः सृष्टि स्थित्यंत कारिणः ॥१॥
नमस्तुलसि कल्याणि ! नमो विष्णु प्रिये शुभे।
नमो मोक्ष प्रदे देवि ! नमः सपत्प्रदायिके ॥२॥
तुलसी पातु मा नित्य सर्वापद्भ्यऽपि सर्वदा।
कीर्तितापि स्मृतावापि पवित्रयति मानवम् ॥३॥
नमामि शिरसा देवीं तुलसीं विलसत्तनुम्।
या दृष्ट्वा पापिनो मर्त्याः मुच्यते सर्व किल्विषात् ॥४॥
तुलस्या रक्षितं सर्वं जगदेतच्चराचरम्।
या विनिर्हंति पापानि दृष्ट्वा वा पापिभिर्नरैः ॥५॥

नमस्तुलस्यतितरां यस्यै वध्वा वलिंकलौ।
कलयति सुख सर्वं स्त्रियो वैश्यास्तथापरे ॥६॥
तुलस्या नापरं किंचिद्दैवतं जगतीतले।
यया पवित्रितो लोको विष्णु संगेन वैष्णवः ॥७॥
तुलस्याः पल्लवं विष्णोः शिरस्यारोपितं कलौ।
आरोपयति सर्वाणि श्रेयांसि वर मस्तके ॥८॥
तुलस्यां सकला देवाः वसंति सततं यतः।
अतस्तामर्चयेल्लोके सर्वान्देवान् समर्चयन् ॥९॥
नमस्तुलसि सर्वज्ञे पुरुषोत्तम वल्लभे।
पाहि मां सर्व पापेभ्यः सर्व संपत्प्रदायिके ॥१०॥
इति स्तोत्रं पुरा गीतं पुंडरीकेण धीमतः।
विष्णु मर्चयता नित्यं शोभनैस्तुलसी दलैः ॥११॥
तुलसी श्री महालक्ष्मीर्विद्या विद्या यशस्विनी।
धर्म्या धर्मानना देवी देव देव मनः प्रिया ॥१२॥
लक्ष्मीः प्रिय सखी देवी द्यौर्भूमिरचला चला।
षोडषैतानि नामानि तुलस्याः कीर्तयेन्नरः ॥१३॥
लभते सुतरां भक्ति मंते विष्णु पदं भवेत्।
तुलसी भूर्महालक्ष्मीः पद्मिनी श्री हरि प्रिया ॥१४॥
तुलसि श्री सखि शुभे पापहारिणि पुण्यदे।
नमस्ते नारदस्तुनुते नारायण मनः प्रिये ॥१५॥
इति पुण्डरीक कृतं तुलसी स्तोत्रं सम्पूर्णम्।

चतुर्वेदी जी की अन्य रचनायें

(प्रकाशित)	(अप्रकाशित)
१—अम्बरीष	११—सोमलता
२—दो आँसू	१२—प्रकाश (गद्य)
३—नृपति मंगल गान	१३—स्फुट कविता
४—संगीत सगर	१४—राधा-सुधा-धारा
५—जुबिली बधाई	१५—नागरी प्रचार और हमारा अधिकार
६—पञ्चराज का महाप्रपंच	१६—एकता का तत्त्व
७—ब्रजभाषा की आशा	१७—सम्बोधन
८—कामुक	१८—ओज की खोज
९—तुलसीदल	
१०—विरहिनी बाला	

सोमलता

यह श्री चतुर्वेदी जी की विविध रस विभूषित कविताओं का संग्रह है। चतुर्वेदी जी की रचनाओं में जैसा माधुर्य और प्रसाद-गुण पाया जाता है वह अनुभव का ही विषय है। इस पुस्तक में आप उनकी भक्ति-विषयक कविताओं को पढ़ कर गद्गद हो जायँगे। चतुर्वेदी जी भगवान से किस प्रकार बेतकल्लुफ़ होकर दावे के साथ प्रार्थना करते हैं वह पढ़ने ही योग्य है। हम दृढ़तापूर्वक कह सकते हैं कि ऐसी चुभती हुई और ओजपूर्ण रचनायें पाठकों ने बहुत ही कम देखी होंगी।

पुस्तक शीघ्र प्रकाशित होने वाली है। मूल्य लगभग एक रुपया होगा। अभी से ग्राहक-श्रेणी में नाम लिखा लेने से तैयार होते ही सेवा में भेज दी जायगी।

कामुक

अथवा

सतीत्व-महिमा

अङ्गरेजी काव्य-साहित्य में मनीषी मिल्टन के 'कोमस' का दर्जा बहुत ऊँचा समझा जाता है, और वह प्रायः विश्व-विद्यालयों की उच्च परीक्षाओं के 'कोर्स' में पढ़ाया जाता है। उसकी भाषा बहुत परिमार्जित तथा प्रौढ़ है, साथ ही कथा भी बड़ी सरस और सदुपदेश पूर्ण है। उसमें मदिरा के दोषों और सतीत्व की महिमा का जैसा उत्कृष्ट निदर्शन कराया गया है वह वास्तव में प्रशंसनीय है। मिल्टन की कविता उत्कृष्ट पर कठिन है।

'कामुक' के अनुवादक चतुर्वेदी श्री रामनारायण जी मिश्र, साहित्य के उत्कट पंडित और प्रसिद्ध काव्य-मर्मज्ञ हैं। अनेक विद्वानों का स्पष्ट मत है कि आपने इस कठिन कार्य का बड़ी योग्यता से निर्वाह किया है। यह आप उक्त ग्रन्थ के अनुशीलन से जान सकेंगे। विद्वच्छिरोमणि महामहोपाध्याय पं० गंगानाथ जी झा ने लिखा है अनुवाद होते हुये भी इसमें स्वतन्त्र काव्य का सा आनन्द आता है। अधिकांश स्थलों पर यही प्रतीत होता है मानो हम अपने किसी धार्मिक उपाख्यान का ही पारायण कर रहे हैं।

आशा है काव्य प्रेमी सज्जन इस पुस्तक को अवलोकन करके आनन्द और सत् शिक्षा प्राप्त करेंगे। यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें।

उत्तम कागज पर बढ़िया छपी सब प्रकार से सुन्दर पुस्तक का मूल्य ॥); डाक-व्यय पृथक्।

पता—सतयुग आश्रम, बहादुरगंज, इलाहाबाद

सत्यभक्त द्वारा सतयुग प्रेस, बहादुरगंज इलाहाबाद में मुद्रित